Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.shisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक के रुप में आधुनिकीकरण का एक अध्ययन

Priyanka Devi
Research Scholar, Department of Education
Prof. Tirmal Singh
Avadh Girl's Degree College Lucknow, India

Article Info

Accepted : 01 March 2025
Published : 15 March 2025

Publication Issue :
March-April-2025
Volume 8, Issue 2

Page Number : 01-07

सारांश:
प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र -छात्राओं की शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक के रुप में आधुनिकीकरण का एक अध्ययन करना है। शोध के लिए लखनऊ जनपद के शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है। शैक्षिक समायोजन जानने के लिए अरूण कुमार सिंह के मापनी का प्रयोग किया गया है। एवं आधुनिकीकरण के लिए स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणामों से प्राप्त हुआ कि स्नातक स्तर पर अध्ययरत छात्राओं की शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक के रूप में आधुनिकीकरण का शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है ।
मुख्य शव्दावली: शैक्षिक समायोजन, आधुनिकीकरण, कारक, प्रभाव आदि।

प्रस्तावना:

शिक्षा आधुनिकीकरण का एक सशक्त साधन है जिन समाजों में वातावरण उच्च स्तर का होता है उनमें तीव्रता से सामाजिक परिवर्तन होता है। शिक्षा द्वारा ही आर्थिक विकास के मार्ग खोजे जाते हैं और सामाजिक आकांक्षाओं का निर्धारण किया जाता है। आधुनिकीकरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अथवा समाज परम्परागत अथवा अर्द्धपरंपरागत स्थिति से निकलकर तकनीक को पाना चाहते हैं जो सामाजिक संरचना, मूल्य संवेग और प्रतिमान से संबंधित है। मॉर्डनाइजेशन अर्थात् आधुनिकीकरण यह शब्द मुख्यतः अंग्रेजी भाषा के शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। मॉर्डनाइजेशन शब्द की व्युत्पत्ति मॉडर्न शब्द लैटिन भाषा के मोगे शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है जो समय चल रहा है या प्रचलित है अतः मॉर्डनाइजेशन का अर्थ यह हुआ कि, जिसका समय चल रहा है या इस समय जिसका प्रचलन है वही मॉडर्न है । परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है। वैज्ञानिक खोजों एवं अनुसंधानों ने अब तक चलती आ रही दुनिया के परंपरागत जीवन में सार्थक हस्तक्षेप आरंभ किया और परंपरागत जीवन शैली तथा जीवन चिंतन के बीच टकराहट स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। परिणाम परम्पराओं, अंध विश्वासों, भ्रांति आदि चली आ रही मान्यताओं, मूल्यों एवं आस्थाओं की जड़े हिलने लगीं और उनका स्थान लेने के लिए नये तर्क, नये विचार गैरपरम्परागत सोच और प्रभाव पर आधारित चिंतन ने अपने कदम आगे बढ़ाये, यह सब आधुनिकता के आधार बने ।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

शैक्षिक समायोजन:

सामान्यतः किसी विद्यार्थी अथवा व्यक्ति का अपने निर्धारित लक्ष्य प्राप्ति प्रक्रिया के लिए परिस्थितियों के अनुकूल बन जाना अथवा परिस्थितियों को अनुकूल बना लेना ही समायोजन कहलाता है। प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ समस्याएं होती हैं। किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि वह कितनी समस्याओं का सामना करता है बल्कि इस तथ्य पर निर्भर करती है कि वह इन समस्याओं एवं उपस्थित नवीन परिस्थितियों के प्रति किस प्रकार से अनुक्रिया करता है या इनमें वह किस प्रकार से समायोजन करता है। समायोजन, मनोविज्ञान का महत्त्वपूर्ण प्रत्यय और चर ही नहीं, बल्कि प्रत्येक मनुष्य की यह एक महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया या अवस्था है।

बोरिंग एवं अन्य (1948) के अनुसार, "समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।"

गेट्स (1948) के शब्दों में, "असमायोजन किसी व्यक्ति तथा उसके वातावरण के मध्य असन्तुलन को प्रदर्शित करता है।"

गेट्स एवं अन्य के अनुसार, "समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने त्रातार में परिवर्तन करता है।"

आइजेंक (1952) एवं उनके साथियों के शब्दों में, "समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएं तथा दूसरी ओर वातावरण की कुछ मांगें या परिस्थितियां पूर्ण रूप से सन्तुष्ट ह्ते हैं अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आवश्यकताओं और परिस्थितियों में सामंजस्य निर्धारित किया जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के अवलोकन के आधार पर कहा जा सकता है कि समायोजन के द्वारा व्यक्ति की आवश्यकताओं और वातावरण की मांगों अथवा परिस्थितियों में सामंजस्य सम्बन्ध प्राप्त होता है। अद्यतन परिवर्तित होती परिस्थितियों में मनुष्य को विभिन्न प्रकारों से अनुकूलित होना पड़ता है। अतः समायोजन के अर्थ को स्पष्ट करते हुए यह भी कहा जा सकता है कि उपस्थित नवीन परिस्थितियों के साथ समय की मांग के अनुरूप सामंजस्य बैठा लेना ही समायोजन है। समायोजन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा विद्यार्थी अथवा व्यक्ति पर्यावरण तथा परिस्थितियों के मध्य अपने को समायोजित करने के लिये अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।

शैक्षिक समायोजन का तात्पर्य शैक्षणिक उपलब्धियों के अर्जन में उपस्थित अवरोधों को दूर करने तथा शैक्षिक परिस्थिति से सम्बन्धित समायोजन से है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से पठन-पाठन, विद्यालय, शिक्षक, विषय, पाठ्यक्रम, पाठ्येत्तर क्रियाएं, सहपाठियों एवं विद्यालयीय अनुशासन से सम्बन्धित समायोजन विद्यार्थियों को करना पड़ता है।

आधुनिकता:

आधुनिकीकरण से तात्पर्य किसी पुराने चलन को नए के अनुसार बदलना है या आधुनिक समय की माँगों के अनुसार किसी पुरानी वस्तु विचार तथा परम्परा को परिवर्तित करने से है। समाजशास्त्र में आधुनिकीकरण शब्द का प्रयोग व्यक्ति के जीवन में होने वाले उन व्यावहारिक व धारणा सम्बन्धी तत्त्वों के लिए किया जाता है जो परंपरागत से भिन्न हैं आधुनिकीकरण की प्रक्रिया प्रत्येक समाज में होने वाले सामाजिक परिवर्तनों की सहचर होती है। मानव जीवन में आधुनिकता का उद्भव उसके अस्तित्व के विकास के साथ जुड़ा हुआ है जब से मानव ने आदिम युग से कुछ नया करना सीखा तब से नित उसके जीवन के क्रियाकलाप नवीन होते गये तथा उसके व्यवहार में भी आधुनिकता आती गयी।

कानेल के शब्दों में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया को मस्तिष्क के खोजयुक्त और अविष्कारक दृष्टि (वैयक्तिक और सामाजिक) जो कि तकनीकी और मशीनों के उपयोग के पीछे निहित है और सामाजिक संबंधोंको नवीन रूपों में प्रेरित करता है के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।

आधुनिकीकरण ऐतिहासिक दृष्टि से एक प्रक्रिया है एक परिवर्तन की प्रक्रिया जो 17वीं सदी से 19वीं सदी के मध्य पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था में आविर्भूत हुई और पुनः पूर्वी यूरोपीय देशों तक प्रसारित हुई। कालान्तर में विशेषकर 19वीं और 20वीं सदी में अफ्रीका, एशिया और दक्षिण अमेरिकी देशों में विकसित हुई। वस्तुतः आधुनिकीकरण अमेरिका और पश्चिमी यूरोप में विकसित सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्थाओं केअनुरूप रूपान्तरण की प्रक्रिया है।

दूबे (1962) ने आधुनिकीकरण को परिभाषित करते हुए व्यक्त किया है कि आधुनिकीकरण वस्तुतः एक प्रक्रिया है परम्परागत अथवा अर्ध-परम्परागत व्यवस्था से उठकर कुछ प्रत्याशित (आकांक्षित) स्तर की प्रौद्योगिकी और उससे जुड़े समाज संरचना के स्वरूप, मूल्य-उन्मेषों, उत्प्रेरणाओं और आदर्शों की तरफ रूपान्तरण की प्रक्रिया है।

आधुनिकीकरण एक प्रक्रिया है, एक रूपान्तरण है परम्परागत व्यवस्था से उठकर नवीन तकनीकी, सामाजिक/आर्थिक नगरीकृत व्यवस्था के रूप में बदलाव की प्रक्रिया है। आधुनिकता के तत्वों को केवल मात्र संग्रह करना आधुनिकीकरण नहीं बल्कि समाज के आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और व्यावहारिक पक्षों में अर्थपूर्ण और तार्किक ढंग से अभिसंयोजन की प्रक्रिया है।

शोध की आवश्यकता एवं महत्व:

शोधार्थी को प्रस्तुत शोध की आवश्यकता समाज में छात्र-छात्राओं की स्थिति को देखकर अनुभव हुई। छात्र-छात्राएं कई बार दहेज प्रथा, जाति प्रथा शैक्षिक भेदभाव आदि के कारण अपनी महत्वाकांक्षाओं को दबा देते हैं जिसका प्रभाव उनकी मानसिक स्थिति पर पड़ता है। भारतीय समाज में इस तरह की रीति-रिवाजों की अधिकता है। जिसका अंत होना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत शोध में शोध छात्रा ने छात्र-छात्राओं की शैक्षिक समायोजन को जानने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध का महत्व इसलिए बढ़ जाता है कि इस शोध द्वारा प्राप्त परिणामों से हम लखनऊ जनपद के विभिन्न स्थानों में निवास कर रहे छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण का स्तर माप सकते हैं।

शैक्षिक समायोजन सम्बन्धी शोध अध्ययन:

कुंडारे एवं घोटी (2019) के अध्ययन का निर्धारित उद्देश्य विद्यार्थियों के समायोजन पर लिंग के प्रभाव को जांचना था। न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों का चुनाव किया गया। अध्ययन में यह पाया गया कि बालक एवं बालिकाओं के मध्य समायोजन के चर के संदर्भ में कोई अंतर नहीं है।

शाह एवं अन्य (2019) ने माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के समायोजन तथा अकादमिक उपलब्धि के मध्य अंतर का पता लगाने हेतु कार्य किया । अध्ययन हेतु 400 शिक्षार्थी प्रतिदर्श के रूप में लिए गये। जिनमें से 200 बालक तथा 200 बालिकाएं थी। अध्ययन में पाया गया कि बालिकाओं की तुलना में बालकों का समायोजन स्तर उच्च है तथा अकादमिक उपलब्धि में बालिकाओं का स्तर बालकों की अपेक्षा उच्च है। अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि एवं समायोजन में लिंग का योगदान होता है।

सरकार एवं बनिक (2017) के शोध का लक्ष्य विद्यार्थियों के समायोजन तथा उनकी अकादमिक उपलब्धि के मध्य संबंध को जानना था। अध्ययन हेतु कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया जिसमें से 60 बालिकाएं तथा 60 बालक थे। अध्ययन में पाया गया कि बालक तथा बालिकाओं के समायोजन तथा उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। साथ ही अध्ययन से प्राप्त आंकड़े बताते हैं कि बालक तथा बालिकाओं के समायोजन तथा उनकी अकादमिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध है।

आधुनिकता सम्बन्धी शोध अध्ययन:

देवनाथ एवं अन्य (2020) के सर्वे शोध के अंतर्गत किए गए अध्ययन का उद्देश्य महिला एवं पुरुष शिक्षकों की आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति की माप करना था । इस अध्ययन हेतु 202 पुरुष तथा 101 महिलाओं को प्रतिदर्श के निमित्त सम्मिलित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु कंप्टिंसिव मॉर्डनाइजेशन इन्वेंट्री का प्रयोग किया गया जिसमें आधुनिकता की सात विमाएं सम्मिलित हैं। अध्ययन में पाया गया कि आधुनिकता की विमाओं शिक्षा राजनीति एवं महिलाओं की प्रस्थिति के संदर्भ में महिला शिक्षक पुरुषों की अपेक्षाकृत अधिक सकारात्मक है।

गुप्ता (2017) के अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति की जांच करना था। अध्ययन हेतु 400 विद्यार्थियों का चयन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य महिला-पुरुष शहरी-ग्रामीण एवं संयुक्त तथा एकल परिवार के संदर्भ में आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति की भी माप करना था। परिणाम बताते हैं कि लिंग वर्ग क्षेत्र तथा परिवार के आधार पर अभिवृत्ति में अंतर है। एकल तथा संयुक्त परिवार के छात्र वछात्राओं की अभिवृत्ति में अंतर नहीं है।

कॉलहोत्र (2016) के अध्ययन का उद्देश्य जम्मू जनपदस्थ विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति की जांच करना था अध्ययन हेतु 100 अध्येताओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि जम्मू कालेज के

कॉलहोत्र (2016) के अध्ययन का उद्देश्य जम्मू जनपदस्थ विद्यार्थियों की आधुनिकीकरण के प्रति अभिवृत्ति की जांच करना था अध्ययन हेतु 100 अध्येताओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया आंकड़ों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत सांख्यिकी का प्रयोग किया गया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि जम्मू कालेज के शिक्षार्थियों में आधुनिकता के प्रति उच्च अभिवृत्ति है।

कौर (2014) ने प्राथमिक अध्यापकों के समायोजन में आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के लिए 100 प्राथमिक शिक्षकों को सरकारी एवं गैर-सरकारी स्कूलों से लिया गया। अध्ययन में पाया गया कि अध्यापिकाएँ अध्यापकों की अपेक्षा अधिक आधुनिक है। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षक एवं शिक्षिकाओं की आधुनिकता के उच्चसमूहों तथा समायोजन में अन्तर है। किन्तु आधुनिकता के निम्न समूहों में कोई अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः प्राथमिक शिक्षकों की आधुनिकता एवं समायोजन में सकारात्मक सम्बन्ध देखा गया।

समस्या कथन:

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधार्थी द्वारा शोध संबंधी कथन निम्नानुसार है :-

"**शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक के रुप में आधुनिकीकरण का एक अध्ययन**

अध्ययन के उद्देश्य:

1. लखनऊ जनपद के महाविद्यालय स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्रायें समाज के विभिन्न घटकों के संदर्भ में कितने आधुनिक है, कितनी जागरूक है तथा वर्तमान समय में किसी पुरातन विचारधाराओं तथा मान्यताओं से ग्रसित हैं, इसकी जाँच करना ।
2. एक कारक के रूप में आधुनिकीकरण का शैक्षिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध परिकल्पनायें:

प्रस्तुत शोध लखनऊ जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में "शैक्षिक समायोजन को प्रभावित करने वाले कारक के रुप में आधुनिकीकरण का एक अध्ययन के लिए निम्नलिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1.शासकीय महाविद्यालय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नही है।

2. विज्ञान समूह तथा कला समूह में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

3. कला एवं वाणिज्य समूह में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

4. विज्ञान एवं वाणिज्य समूह में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

न्यादर्श :

शासकीय तथ अशासकीय महाविद्यालयों का चयन स्वैच्छिक रूप से किया गया है । जिसमें दो शासकीय महाविद्यालय, शासकीय कन्या महाविद्यालय से एवं शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय से 60-60 छात्र-छात्राएं इस प्रकार दो अशासकीय महाविद्यालय महावीर महाविद्यालय एवं दयानंद पीजी कॉलेज बछरावां से 60-60 छात्र-छात्राओं का चयन न्यादर्श के रूप में किया गया है । इस प्रकार न्यादर्श के रूप में कुल 240 छात्र-छात्राओं का चयन किया गया है।

उपकरण:

शोधार्थी द्वारा उपकरण के रूप में अरूण कुमार सिंह के शैक्षिक समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया है। एवं आधुनिकीकरण मापनी के लिए शोध छात्रा द्वारा स्वनिर्मित मापनी का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या और परिणाम:

प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक विचलन का उपयोग किया गया है ।

सारणी क्रमांक-01

1.शासकीय महाविद्यालय एवं अशासकीय महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना

शासकीय महा.कीय एवं अशासकीय महाविद्यालय की छात्र-छात्राएं	एन1	एन2	एम1	एम2	एल्फा1	एल्फा2	0.05	0.01
120	60	60	124	123	13.09	13.28	1.98	2.63

क्रांतिक विचलन सीआर = 0.291

प्राप्त t क्रांतिक विचलन (CR) का मान 0.05 एवं 0.01 स्तर के मानों से कम है। अतः दोनों में मानों में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः प्रथम परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक-02

2. विज्ञान समूह तथा कला समूह में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना

	एन1	एन2	एम1	एम2	एल्फा1	एल्फा2	सीआर	0.05	0.01
	40	40	130	122	13.34	10.3	2.80	1.98	2.63

प्राप्त t (क्रांतिक मान) उपरोक्त 0.05 एवं 0.01 के मानों से अधिक है। अतः दोनों में कोई सार्थक अंतर है । अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक-03

3. कला एवं वाणिज्य समूह में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना ।

	एन1	एन2	एम1	एम2	एल्फा1	एल्फा2	सीआर	0.05	0.01
	40	40	123	125	10.4	14.83	0.89	1.98	2.63

प्राप्त t CR का मान उपरोक्त दोनों मानों से कम है। कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

सारणी क्रमांक-04

4. विज्ञान एवं वाणिज्य समूह में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण के प्रति शैक्षिक समायोजन के प्रभाव का अध्ययन करना।

एन 1	एन 2	एम1	एम2	एल्फा1	एल्फा2	सीआर	0.05	0.01
40	40	128.32	124.73	13.34	14.82	1.30	1.98	2.63

प्राप्त t CR का मान उपरोक्त दोनों मानों से कम है। कोई सार्थक अंतर नहीं है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है ।

निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध लखनऊ जनपद के महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में आधुनिकीकरण की शैक्षिक समायोजन मापनी से पता चलता है कि दी गई परिकल्पनाओं में 0.05 एवं 0.01 पर कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात् सभी परिकल्पनायें स्वीकृत की जाती है।

भविष्य शोध हेतु सुझाव :

1.यह शोध सार्वजनिक और निजी दोनों संस्थानों के 240 उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के व्यापक नमूने पर लागू किया जा सकता है।

2.शैक्षिक समायोजन और सामान्य समायोजन के संबंध में तनाव का अध्ययन करना।

3.स्नातक और परास्नातक छात्रों में व्यक्तित्व लक्षणों पर आधुनिकीकरण के प्रभाव का अध्ययन।

शैक्षिक निहितार्थ:

1.वर्तमान अध्ययन के निष्कर्षों से आधुनिकीकरण और उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक समायोजन के बीच महत्वपूर्ण संबंध का पता चलता है।

2.माता-पिता और शिक्षकों का प्राथमिक कार्य उन क्षेत्रों की पहचान करना होना चाहिए जहां विद्यार्थी शैक्षिक समायोजन के लिए संघर्ष कर रहे हैं और सभी क्षेत्रों में उचित समायोजन के लिए वातावरण में सुधार करने के लिए काम करना चाहिए।

3.अभिभावकों को स्कूल के माहौल और सुविधाओं से परिचित होना चाहिए।

4.प्रशासकों को ऐसे लोगों को नियुक्त करना चाहिए जो अच्छी तरह से योग्य हों।

5.शिक्षकों को सभी बच्चों के लिए स्वागत योग्य वातावरण उपलब्ध कराना चाहिए तथा उन्हें शैक्षिक समायोजन के समान अवसर प्रदान हो सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भटनागर सी.एस : एजूकेशन एण्ड सोशल चेंज निरवा एसोसिएट्स कलकत्ता 1972

2. शर्मा आर.ए. (1995): शिक्षा अनुसंधान, नवीन संस्करण, मेरठ बुक डिपो 658 पीपी

3. राय पारसनाथ (1997) अनुसंधान परिचय तृतीय संस्करण आगरा, शिक्षा संबंधी प्रकाशन

4. सरीन शशिकला एवं सरीन शैक्षिक अनुसंधान विधियों नवीनतम संस्करण, अंजनी (1995) आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर ।